



न्यायालय

सहायक कलक्टर/उपखण्ड अधिकारी

गुढामालानी-बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी -केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)

वाद संख्या:- 2025 / 135

दर्ज तिथि:- 22.04.2025

1. अचलाराम पुत्र डालूराम
 2. रेखाराम पुत्र डालूराम
 3. सताराम पुत्र डालूराम
 4. चंदाराम पुत्र डालूराम
 5. भल्लाराम पुत्र डालूराम
 6. वीरमाराम पुत्र डालूराम
- जाति जाट निवासी खारड़ी बेरी तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर

.....वादी

बनाम

1. डालूराम पुत्र चेनाराम
 2. चम्पादेवी पुत्री डालुराम
 3. सन्तुदेवी पुत्री डालुराम
- जाति जाट निवासी खारड़ीबेरी तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर
4. शाखा प्रबंधक राजस्थान मरुधरा ग्रामीण बैंक शाखा सड़ा।
 5. तहसीलदार नोखड़ा

.....असल प्रतिवादीगण

.....तकमीली प्रतिवादीनगण

उपस्थित अधिवक्ता
वादी:- श्री ठाकराराम
प्रतिवादी:- ईकबाली

राजस्व वाद अन्तर्गत धारा-88, 188
राजस्थान काश्तकारी अधि0-1955

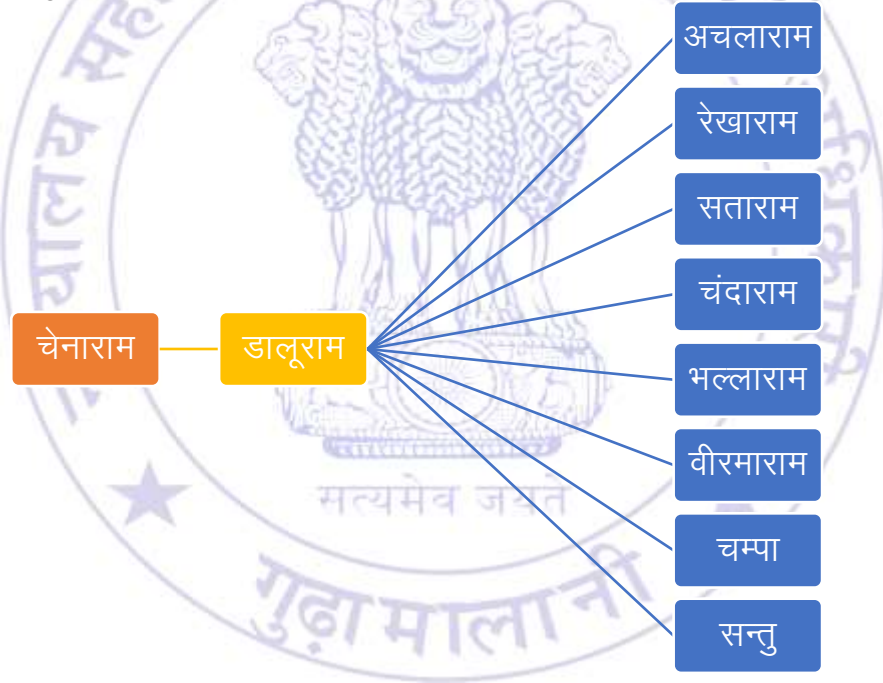
---:निर्णय:-

निर्णय तिथि:-07.07.2025

1. आज यह पत्रावली वाद पत्र बाबत इस्तकराहक्क अन्तर्गत धारा-88, 188 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 का वास्ते निर्णय हेतु पेश हुई। वाद पत्र का सूक्ष्म वृतान्त इस प्रकार से है कि वादी ने निवेदन किया गया कि मुताबिक राजस्व रिकॉर्ड आराजी हाल खसरा संख्या 230 / 0.0728 है0, 231 / 23.2183 है0, 247 / 2 / 0.0890



है0, 678/247/0.9936 है0 मौजा खारड़ी बेरी तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर में अवस्थित है। उक्त आराजी वादीगण व प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 के दादा तथा प्रतिवादी संख्या 01 के पिता चेनाराम की खातेदारी आराजी थी। खातेदार चेनाराम की विरासत अनुसार डालूराम पुत्र चेनाराम के हिस्से खातेदारी दर्ज हुई। इस प्रकार उक्त खातेदारी आराजी पैतृक आराजी है। वादीगण व प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 तथा प्रतिवादी संख्या 01 हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत हिन्दू के अंतर्गत आने के कारण हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित रखते हैं। इसी अनुसार वादीगण वर्तमान में मौके पर काबिज काश्त है। वर्तमान में प्रतिवादी संख्या 01 उक्त आराजी को भू माफियाओं को बेचान करने पर आमादा है। साथ ही वादीगण संख्या 01 ता 02 को पूर्व में जरिये पंजीकृत दानपत्र रकबा 2.3461 है0 भूमि प्राप्त हो चुकी है। अतः उक्त दानपत्र से मिली भूमि सहित वर्तमान में वादीगण संख्या 01 ता 02 को रकबा 2.6441-2.6441 है0 का खातेदार घोषित किया जावे। अंत में अधिवक्ता वादी द्वारा उक्त आराजी पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित होने के आधार पर वादीगण को खातेदार घोषित किया जाने का निवेदन किया। वादीगण का वंशवृक्ष निम्नानुसार है:-



2. वाद पत्र दर्ज रजिस्टर किया जाकर प्रतिवादी को जरिये नोटिस तलब किया गया। प्रकरण में सभी प्रतिवादीगण संख्या 02 ता 03 के बावजूद रजिस्टर्ड तामिल अनुपस्थित रहने के कारण उनके विरुद्ध एकतरफा कार्यवाही अमल में लाई गई। प्रकरण में प्रतिवादी संख्या 01 द्वारा ईकबाली जवाबदावा प्रस्तुत कर वादीगण का वाद मुताबिक ईशतद्दुआ स्वीकार किये जाने का निवेदन किया गया। तत्पश्चात् पत्रावली वादी साक्ष्य में नियत की गई। प्रकरण में वादीगण द्वारा साक्ष्य स्वरूप निम्न दस्तावेज प्रस्तुत किए-

दस्तावेज	संवत्/विवरण	प्रदर्श
जमाबंदी	खाता संख्या 19 मौजा खारड़ी बेरी	प्रदर्श-01

नामांतरकरण	नामांतरकरण संख्या 109 मौजा खारड़ी बेरी	प्रदर्श-02
------------	--	------------

3. प्रकरण में वादीगण द्वारा साक्ष्य स्वरूप निम्न गवाह प्रस्तुत किए—

नाम	जाति	निवासी
अचलाराम पुत्र डालुराम	जाट	खारड़ी बेरी
डालुराम पुत्र चैनाराम	जाट	खारड़ी बेरी

4. पत्रावली पर विद्वान अधिवक्ता वादी की बहस सुनी गई। दौराने बहस विद्वान अधिवक्ता द्वारा वाद पत्र में अंकित बिन्दुओं को मात्र दौहराते हुए आराजी पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के तहत उक्त पैतृक आराजी में अपना हिस्सा निहित होने के आधार पर वादी को खातेदार घोषित किया जाने का निवेदन किया।

5. प्रकरण में वादी व प्रतिवादीगण के मध्य विवाद का कोई बिन्दु पत्रावली पर नहीं होने के कारण प्रकरण का प्रथम सुनवाई पर निर्णय किया जाना उचित प्रतीत होता है। इस संबंध में सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के आदेश-15 नियम-01 में प्रावधान बनाये गये हैं। जिसका उद्धरण इस प्रकार है:—

ORDER XV

Disposal of the Suit at the first hearing

1. Parties not at issue.—

(1) Where at the first hearing of a suit it appears that the parties are not at issue on any question of law or of fact, the Court may at once pronounce judgment.

6. मैंने विद्वान अधिवक्ता वादी की बहस पर मनन किया गया एवं पत्रावली पर संलग्न दस्तावेजात् का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया गया। प्रकरण में वादी द्वारा तीन निम्न अनुतोष निवेदित किये हैं:—

1. वादग्रस्त भूमि में प्रतिवादी संख्या 01 के साथ वादीगण को सहखातेदार घोषित किया जावे।
2. वादीगण संख्या 01 ता 02 को पूर्व में जरिये पंजीकृत दानपत्र रकबा 2.3461 है० भूमि प्राप्त हो चुकी है। अतः उक्त दानपत्र से मिली भूमि सहित वर्तमान में वादीगण संख्या 01 ता 02 को रकबा 2.6441-2.6441 है० का खातेदार घोषित किया जावे।
3. प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 के हिस्से की भूमि वादी संख्या 01 ता 06 के पक्ष में मौखिक हकतर्क किये जाने से प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 के हिस्से की भूमि वादी संख्या 01 ता 06 की खातेदारी में घोषित की जावे।

7. पत्रावली पर अनुतोषवार विश्लेषण किया जाना आवश्यक है। सर्वप्रथम अनुतोष संख्या 01 जो कि निम्न प्रकार है:—

1. वादग्रस्त भूमि में प्रतिवादी संख्या 01 के साथ वादीगण को सहखातेदार घोषित किया जावे।

8. प्रकरण में प्रथम अनुतोष राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-15 से संबंधित है। अतः सर्वप्रथम राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-15 का उद्धरण यहां प्रासंगिक है। जो कि इस प्रकार है:-

15. Khatedar tenants— (1) Subject to the provisions of section 16 and clause (d) of Sub-section (1) of section 180 every person who, at the commencement of this Act, is a tenant of land otherwise than as a sub-tenant or a tenant of Khudkasht or who is, after the commencement of this Act, admitted as a tenant otherwise than a sub-tenant or tenant of Khudkasht or an allottee of land under, and in accordance with, rules made under section 101 of the Rajasthan Land Revenue Act, 1956 (Rajasthan Act 15 of 1956) or who acquires Khatedari rights in accordance with provisions of this Act or of the Rajasthan Land Reforms and Resumption of Jagir Act, 1952 (Rajasthan Act VI of 1952) or of any other law for the time being in force shall be a Khatedar tenant and shall, subject to the provision of this Act be entitled to all the rights conferred; and be subject to all the liabilities imposed on Khatedar tenants by this Act:

Provided that no Khatedari rights shall accrue under this section to any tenant, to whom land is or has been let out temporarily in Gang Canal, Bhakra, Chambal or Jawai project area or any other area notified in this behalf by the State Government.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-section (1) Khatedari rights shall not accrue there under to any person to whom land had been let out before the commencement of this Act by the State Government in furtherance of the Grow More Food Campaign or under some special order subject to some specified conditions or in pursuance of some statutory or non-statutory rules and who shall have, before such commencement, made a default in securing the objective of such campaign or a breach of any such order, condition or rule.

(3) Any person referred to in sub-section (2) may, within three years from the date of commencement of this Act and on payment of a court-fee of twenty five naye paise apply to the Assistant Collector having jurisdiction praying for a declaration that acquired Khatedari right under sub-section (1) in the land held by him.

(4) Such application may be made on any of the following grounds, namely:

(a) that the land held by him was let out to him after the commencement of this Act.

(b) that it was not let out to him in any of the circumstances specified in sub-section (2).

(c) that when the- land was so let out to him he was not apprised of such circumstances.

(d) that he had, before such commencement made no default or breach of the nature specified in sub-section (2).

(5) The Assistant Collector shall, upon the presentation of an application under sub-section (3), make inquiry in the prescribed manner and afford reasonable opportunity to the applicant of being heard and shall, if he does not reject the application, declare the applicant to have become Khatedar tenant of his holding in accordance with and subject to the provisions of the subsection (1).

7. प्रकरण में वादी द्वारा राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-15 के अंतर्गत हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत अधिकार सृजित होने के आधार पर खातेदार के रूप में दर्ज होने का अनुतोष चाहा गया है। इस संबंध में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 का प्रकरण में अवलोकन किया जाना आवश्यक है जिसके प्रासंगिक विवरण का उद्धरण इस प्रकार है:-

6. Devolution of interest in coparcenary property.—

(1) On and from the commencement of the Hindu Succession (Amendment) Act, 2005 (39 of 2005), in a Joint Hindu family governed by the Mitakshara law, the daughter of a coparcener shall,—

(a) by birth become a coparcener in her own right the same manner as the son;

(b) have the same rights in the coparcenary property as she would have had if she had been a son;

(c) be subject to the same liabilities in respect of the said coparcenary property as that of a son, and any reference to a Hindu Mitakshara coparcener shall be deemed to include a reference to a daughter of a coparcener:

Provided that nothing contained in this sub-section shall affect or invalidate any disposition or alienation including any partition or testamentary disposition of property which had taken place before the 20th day of December, 2004.

8. उक्त उद्धरण अनुसार हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि किसी हिन्दू पुरुष की संपत्ति में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के अनुसार पुत्र व पुत्री को समान अधिकार व दायित्व दिये जाने के प्रावधान है। प्रकरण में तथ्य निर्विवादित है कि वादी व प्रतिवादी हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत हिन्दू होने के कारण प्रकरण में सम्पत्ति पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के प्रावधान लागू होते हैं। साथ ही वादी द्वारा प्रस्तुत जमाबंदी के अवलोकन से स्पष्ट है कि मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 की स्वअर्जित आराजी

नहीं होकर पैतृक आराजी है। साथ ही प्रकरण में यह तथ्य भी निर्विवादित है कि वादीगण व प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 प्रतिवादी संख्या 01 की संतान हैं।

9. प्रकरण में वादी द्वारा मुतनाजा आराजी पर वादी व प्रतिवादी हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत हिन्दू होने के कारण प्रकरण में सम्पत्ति पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के प्रावधानों के तहत मुताबिक कानूनी हिस्सा खातेदारी अधिकारों की घोषणा का अनुतोष चाहा गया है। अतः हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के तहत वादीगण एवं प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 के प्रतिवादी संख्या 01 की संतान होने तथा प्रकरण में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 लागू होने तथा मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 की स्वअर्जित आराजी नहीं होकर पैतृक आराजी होने के आधार पर वादी का अनुतोष मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के अनुसार हक हिस्से तक स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है।
10. प्रकरण में द्वितीय अनुतोष वादीगण संख्या 01 ता 02 को पूर्व में जरिये पंजीकृत दानपत्र रकबा 2.3461 है० भूमि प्राप्त हो चुकी है। अतः उक्त दानपत्र से मिली भूमि सहित वर्तमान में वादीगण संख्या 01 ता 02 को रकबा 2.6441-2.6441 है० का खातेदार घोषित किया जावे। प्रकरण में वादी संख्या 01 ता 02 को पूर्व में ही पंजीकृत दानपत्र के जरिये मुतनाजा आराजी में से रकबा 2.3461 है० भूमि प्राप्त हो चुकी है। साथ ही वादी संख्या 01 ता 02 द्वारा उक्त दानपत्र से मिली आराजी को साथ मिलाते हुए वादीगण संख्या 01 ता 06 एवं प्रतिवादी संख्या 01 को बराबर-बराबर हिस्से का खातेदार घोषित किये जाने का निवेदन किया गया है। इस प्रकार वादीगण का उक्त अनुतोष वादी संख्या 01 ता 02 के पूर्व में जरिये पंजीकृत दानपत्र प्राप्त आराजी को मिलाते हुए वादीगण संख्या 01 ता 06 एवं प्रतिवादी संख्या 01-03 को बराबर-बराबर हिस्से का खातेदार घोषित किया जाना उचित प्रतीत होता है।
11. प्रकरण में वादी द्वारा मुतनाजा आराजी पर वादी व प्रतिवादी हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के तहत हिन्दू होने के कारण प्रकरण में सम्पत्ति पर हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के प्रावधानों के तहत मुताबिक कानूनी हिस्सा खातेदारी अधिकारों की घोषणा का अनुतोष चाहा गया है। परंतु किसी खातेदार का अपने खातेदारी अधिकारों का हकत्याग किया जाना सम्पत्ति का अंतरण अधिनियम-1882 के प्रावधानों के तहत शासित होता है। न्यायालय में वादी या प्रतिवादी राजीनामे के माध्यम से राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 के तहत ही अनुतोष इकरार कर सकते हैं। इस प्रकार प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 को उक्त खातेदारी आराजी में अपने अधिकारों का परित्याग सम्पत्ति का अंतरण अधिनियम-1882 के प्रावधानों तहत करना होगा। अतः हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 की धारा-6 के तहत वादीगण एवं प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 के प्रतिवादी संख्या 01 की संतान होने तथा प्रकरण में हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 लागू होने तथा मुतनाजा आराजी प्रतिवादी संख्या 01 की स्वअर्जित आराजी नहीं होकर पैतृक आराजी होने के आधार पर वादी का अनुतोष मुताबिक हिन्दू

उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के अनुसार हक हिस्से तक स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है।

12. इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रकरण में पत्रावली के अवलोकन के अनुसार स्पष्ट है कि वादीगण के पिता प्रतिवादी संख्या 01 की पैतृक खातेदारी आराजी खसरा संख्या 230/0.0728 है0, 231/23.2183 है0, 247/2/0.0890 है0, 678/247/0.9936 है0 मौजा खारड़ी बेरी तहसील नोखड़ा में अवस्थित है। प्रकरण में वादीगण का प्रथम अनुतोष स्वीकार होने के पश्चात् मुतनाजा आराजी पर वादी का संयुक्त काश्तकार घोषित होने के आधार पर वादी की संयुक्त खातेदारी होना पूर्ण रूप से साबित होती है। साथ ही वादीगण के द्वितीय अनुतोष के अनुसार वादी संख्या 01 ता 02 को प्रतिवादी संख्या 01 द्वारा पूर्व में किये गये पंजीकृत दानपत्र में प्राप्त हुई आराजी से हस्तगत दावा में प्राप्त होने वाली आराजी में मिलाते हुए वादी संख्य 01 ता 06 एवं प्रतिवादी संख्या 01 ता 03 को बराबर हिस्से का खातेदार घोषित किया जाना उचित प्रतीत होता है। प्रकरण में वादीगण द्वारा प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 द्वारा मौखिक हकत्याग किया जाने से प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 के अधिकारों को हटाते हुए वादीगण एवं प्रतिवादी संख्या 01 को 1/7-1/7 हिस्से का खातेदार घोषित किये जाने का निवेदन किया गया है। परंतु प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 को उक्त खातेदारी आराजी में अपने अधिकारों का परित्याग सम्पत्ति का अंतरण अधिनियम-1882 के प्रावधानों तहत करने होने के कारण एवं वादीगण एवं प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 के प्रतिवादी संख्या 01 की संतान होने के आधार पर वादीगण एवं प्रतिवादी संख्या 01 ता 03 को मुतनाजा आराजी पर 1/9-1/9 हिस्से का खातेदार घोषित किया जाना उचित प्रतीत होता है। अतः

आदेश है कि

वादी का दावा बाबत इस्तकरारहक्क आंशिक स्वीकार किया जाकर डिक्री किया जाता है। वादी को मुतनाजा आराजी हाल खसरा संख्या 230/0.0728 है0, 231/23.2183 है0, 247/2/0.0890 है0, 678/247/0.9936 है0 मौजा खारड़ी बेरी तहसील नोखड़ा में उक्त अविभाजित सहदायिकी सम्पत्ति में सहदायक होने के कारण अपना हिस्सा घोषित करवाकर पृथक हिस्सा कायम करवाने हेतु घोषणा एवं विभाजन का दावा लाकर घोषणा एवं विभाजन करवाने का अधिकारी मानते हुए मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के अनुसार पुत्रियों को समान अधिकार मानते हुए वादी संख्या 01 ता 06 एवं प्रतिवादी संख्या 01 ता 03 प्रत्येक को 1/9-1/9 हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। साथ ही प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 का मौखिक हकत्याग अस्वीकार किया जाता है। साथ ही वादी संख्या 01 ता 02 के पक्ष में निष्पादित पंजीकृत दानपत्र में मिली आराजी को समाहित

करते हुए वादी संख्या 01 व 02 को कुल आराजी में प्रत्येक को 1/9-1/9 हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। साथ ही उक्तानुसार संयुक्त खातेदार दर्ज होने बाबत राजस्व इंद्राज दुरुस्त करवाने का अधिकारी घोषित किया जाता है।

निर्णय की पृथक से पर्चा डिक्री तैयार की जाये।

आज 07.07.2025 यह निर्णय मेरे द्वारा खुले न्यायालय में सुनाया जाकर हस्ताक्षर एवं मोहर युक्त जारी किया गया।



(केशव कुमार मीना आर.ए.एस)

सहायक कलक्टर

गुढामालानी-बाड़मेर



न्यायालय

सहायक कलक्टर/उपखण्ड अधिकारी

गुढामालानी-बाड़मेर

(पीठासीन अधिकारी -केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)

वाद संख्या:- 2025 / 135

दर्ज तिथि:- 22.04.2025

1. अचलाराम पुत्र डालूराम
 2. रेखाराम पुत्र डालूराम
 3. सताराम पुत्र डालूराम
 4. चंदाराम पुत्र डालूराम
 5. भल्लाराम पुत्र डालूराम
 6. वीरमाराम पुत्र डालूराम
- जाति जाट निवासी खारड़ी बेरी तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर

.....वादी

बनाम

1. डालूराम पुत्र चेनाराम
 2. चम्पादेवी पुत्री डालुराम
 3. सन्तुदेवी पुत्री डालुराम
- जाति जाट निवासी खारड़ीबेरी तहसील नोखड़ा जिला बाड़मेर
4. शाखा प्रबंधक राजस्थान मरुधरा ग्रामीण बैंक शाखा सड़ा।
 5. तहसीलदार नोखड़ा

.....असल प्रतिवादीगण

.....तकमिली प्रतिवादीनगण

उपस्थित अधिवक्ता
वादी:- श्री ठाकराराम
प्रतिवादी:- ईकबाली

राजस्व वाद अन्तर्गत धारा-88, 188
राजस्थान काश्तकारी अधि0-1955

—:पर्चा डिक्री:—

वादी का दावा बाबत इस्तकरारहक्क आंशिक
स्वीकार किया जाकर डिक्री किया जाता है। वादी
को मुतनाजा आराजी हाल खसरा संख्या

230/0.0728 है0, 231/23.2183 है0, 247/2/0.0890 है0, 678/247/0.9936 है0 मौजा खारड़ी बेरी तहसील नोखड़ा में उक्त अविभाजित सहदायिकी सम्पत्ति में सहदायक होने के कारण अपना हिस्सा घोषित करवाकर पृथक हिस्सा कायम करवाने हेतु घोषणा एवं विभाजन का दावा लाकर घोषणा एवं विभाजन करवाने का अधिकारी मानते हुए मुताबिक हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम-1956 के अनुसार पुत्रियों को समान अधिकार मानते हुए वादी संख्या 01 ता 06 एवं प्रतिवादी संख्या 01 ता 03 प्रत्येक को 1/9-1/9 हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। साथ ही प्रतिवादी संख्या 02 ता 03 का मौखिक हकत्याग अस्वीकार किया जाता है। साथ ही वादी संख्या 01 ता 02 के पक्ष में निष्पादित पंजीकृत दानपत्र में मिली आराजी को समाहित करते हुए वादी संख्या 01 व 02 को कुल आराजी में प्रत्येक को 1/9-1/9 हिस्से का खातेदार घोषित किया जाता है। साथ ही उक्तानुसार संयुक्त खातेदार दर्ज होने बाबत राजस्व इंद्राज दुरुस्त करवाने का अधिकारी घोषित किया जाता है।

यह पर्चा-डिक्री पालनार्थ हेतु तहसीलदार नोखड़ा को भिजवाई जावे। आदेश जारी हो। पक्षकारान अपना-अपना खर्चा स्वयं वहन करेंगे।

यह पर्चा-डिक्री आज दिनांक 07.07.2025 को मेरे द्वारा लिखवाई जाकर हस्ताक्षर एवं मुहर युक्त जारी की जाकर खुले न्यायालय में सुनाई गई।

(केशव कुमार मीना आर.ए.एस)

सहायक कलक्टर

गुढामालानी-बाड़मेर